International Journal of Applied Research 2016; 2(12): 73-75

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(12): 73-75
www.allresearchjournal.com
Received: 11-10-2016
Accepted: 12-11-2016

प्रेमपाल यादव
प्रवक्ता –इतिहास
राजकीय महाविद्यालय बहरोड़

Correspondence
प्रेमपाल यादव
प्रवक्ता –इतिहास
राजकीय महाविद्यालय बहरोड़

जाजऊ युद्ध का राजस्थान की राजनीति पर प्रभाव

प्रेमपाल यादव

औरंगजेब की अहमदनगर में 03 मार्च 1707 ई. को मृत्यु हो गई थी।[1] उसकी मृत्यु के बाद उसके तीन पुत्रों मुअज्जम, आजम व कामबख्श के मध्य राजगद्दी प्राप्ति हेतु उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ। इस संघर्ष का निर्णायक युद्ध जाजऊ का था। 08 जून 1707 ई. को लड़े गये जाजऊ के युद्ध में मुअज्जम ने आजम को परास्त कर बहादुरशाह के नाम से मुगल बादशाह बना। जाजऊ के युद्ध ने मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी का प्रश्न हल कर दिया किन्तु उसने राजस्थान की राजनीति में कुछ ऐसी नयी गुत्थियाँ डाल दी जिनका परिणाम आगे चलकर राजस्थान के लिए ही नहीं मुगल साम्राज्य के लिए भी हानिकारक हुआ।[2]

इस शोध पत्र में इन्हीं गुत्थियों जैसे मुगल बादशाहों की राजपूतों के प्रति निति, राजपूतों द्वारा अपने राज्य की प्राप्ति हेतु मुगलों के विरूद्ध गठबन्धन, मेवाड़ के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना, वैवाहिक सम्बन्धों से आगे आने वाली समस्याएं, कोटा–बूँदी हाडा घरानों का पारस्परिक संघर्ष, राजपूत शासकों का मुगल साम्राज्य के हिताहित का विचार नहीं करना, राजस्थान में मराठों का प्रवेश तथा मुगल साम्राज्य का स्थान गौण होना आदि के सम्बन्ध में विश्लेषण किया गया है।

जाजऊ युद्ध में राजस्थानी शासकों की भूमिका

इस युद्ध में बूदीं का बुद्धसिंह तथा आमेर के विजय सिंह ने मुअज्जम का पक्ष लिया तथा कोटा का रामसिंह आमेर के सवाई जयसिंह ने आजम का पक्ष लिया। आमेर का सवाई जयसिंह युद्ध के अन्तिम क्षणों में मुअज्जम के खेमे में चला गया। मुअज्जम इस युद्ध में विजय हुआ इसके कारण अब राजस्थान की राजनीति में दुरगामी परिणाम निकले।

बहादुरशाह द्वारा आमेर व जोधपुर को खालसा घोषित करना

बहादुरशाह सवाई जयसिंह से प्रसन्न नहीं था क्योंकि उसने आरम्भ में आजम का साथ दिया था। जाजऊ के मैदान से निपटकर उसने सवाई जयसिंह को दण्ड देने का निश्चय किया। इस अभिप्राय से उसने आमेर की और प्रस्थान कर दिया। वहाँ पहुँचकर उसने विजयसिंह को आमेर का शासक घोषित कर पुरस्कृत किया। इस परिवर्तन से सवाई जयसिंह एक मुगल मनसबदार की स्थिति में रह गया। आमेर का नाम इस्लामाबाद रखा गया और उसका फौजदार सैयद हुसैन खाँ को बनाया।[3]

अजीतसिंह मुअज्जम का पक्षधर न होने से बादशाह का कृपा पात्र न बन सका और न उसने अपना वकील नये बादशाह के प्रति स्वामीभक्ति दिखाने भेजा था। अतः बादशाह नाराज होकर ससैन्य जोधपुर की तरफ बढ़ा और जोधपुर पर अधिकार कर जोधपुर को खालसा घोषित कर जोधपुर का नाम मुहम्मदाबाद कर दिया।[4] इस प्रकार के रद्दोबदल के बाद बहादुरशाह दक्षिण की ओर कामबख्श के विद्राह को दबाने प्रस्थान किया।

राजपूतों द्वारा अपने राज्य की प्राप्ति हेतु गठबन्धन करना

जब सवाई जयसिंह को आमेर के खालसा किये जाने का ज्ञान हुआ तब वह तथा जोधपुर का अजीतसिंह बादशाह से दक्षिण जाते वक्त 15 फरवरी 1708 को मेड़ता में मिले तथा उसके साथ मण्डलेश्वर (इन्दौर राज्य) तक गये लेकिन बादशाह ने तब ही 20 अप्रेल 1708 ई. को विजयसिंह के नाम फरनाम जारी कर दिया। अतः वहां से लौटकर दोनों महाराणा अमरसिंह द्वितीय के पास सहायता लेने के लिए उदयपुर गये।[5]

मेवाड़, मारवाड़ और आमेर के शासकों ने मुगल शक्ति के विरूद्ध लड़ने की योजना बनायी और महाराणा ने जयसिंह से अपनी पुत्री चन्द्रकुँवरी का विवाह कर दिया। तीनो राज्यों की सेनाये पहले जोधपुर पहुँची जिस पर अजीतसिंह का अधिकार जुलाई 1708 को स्थापित किया।

यहाँ से जब सेनाएं आमेर की ओर चली तो पाया कि कछवाह सरदारों ने अपने प्रयत्नों से मुगल फौजदार और विजयसिंह को परास्त कर जयसिंह के नाम की दुहाई घोषित कर दी। वैसे तो जयसिंह ने मेवाड़ से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपना पक्ष प्रबल कर लिया था जिससे उसे अपने पैतृक राज्य को पुनः प्राप्त करने में सहायता मिली थी, परन्तु इसी विवाह से यह शर्त मानकर की चन्दकुँवरी से पैदा होने वाला पुत्र आमेर के राज्य का उत्ताराधिकारी होगा उसने आमेर राज्य मे गृह कलह के बिज बो दिये। इस बखेड़े से राजपूताने पर मराठों का प्रभाव बढ़ता गया।[6]

राजस्थान में राजपूत शासकों के मध्य वैवाहिक सम्बन्धों का विस्तार

उदयपुर राजपरिवार ने कई वर्षों से उन राजपरिवारों के साथ विवाह सम्बन्ध करना बंद कर दिया था जिन्होंने अपनी कन्याएं मुगल बादशाहों को दी थी 1708 की इस संधि में जयपुर और मारवाड़ के राजाओं के द्वारा उदयपुर राजपरिवार के साथ विवाह सम्बन्ध करने की प्रतिष्ठा को पुनः स्वीकृति प्रदान करने वाली शर्त विशेष तौर पर जोड़ी गई थी। इस बिन्दु पर राणा इस शर्त पर राजी हुआ की उनके यहां उदयपुर राजपरिवार की कन्याओं से उत्पन्न पुत्र अपने पिताओं की मृत्यु के बाद राज्य के उत्तराधिकारी होंगे इस भाँती एक ऐसा सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया जिसमें गृह कलह के बीजाणु विद्यमान थे। उसके परिणाम स्वरूप आन्तरिक फूट उत्पन्न हुई। इसके कारण राजस्थान के राजनैतिक रंगमंच पर एक मध्यस्थ 'मराठा' का पदार्पण हुआ जो मुसलमानें से भी बदतर था।[7]

राजस्थान मे मुगल सत्ता का पराभव

औरंगजेब की मृत्यु के समय तक राजस्थान में मुगल सत्ता का प्रभुत्व था लेकिन जाजऊ युद्ध के बाद जब बहादुरशाह ने आमेर व जोधपुर पर अधिकार कर लिया तब इन राज्यों के अपदस्थ शासकों ने मेवाड़ के महाराणा के साथ संधि करके सैनिक शक्ति के बल पर आमेर व जोधपुर पर अधिकार कर लिया। आमेर व जोधपुर पर मुगल अधिकार जब समाप्त हो गया तो मुगल बाहशाह ने हुसैन खाँ को पुनः आमेर लेने के लिए भेजा जब यह सूचना राजपूतों को मिली तो उन्होंने उसका मार्ग अवरूद्ध करने के लिए सांभर नगर पर कब्जा कर लिया। सैयद हुसैन खाँ को साँभर के निकट मुकाबला करना पड़ा। 16 अक्टूबर 1708 ई. को 3000 मुगल सैनिकों के साथ स्वयं हुसैन खाँ मथुरा व नारनौल के फौजदार तथा अन्य अधिकारी खेत रहे। इस विजय से राजपूतों के हौसेले बढ़ गए और उन्होंने दिल्ली व आगरा की तरफ फौजें भेजकर अपने प्रभुत्व का प्रदर्शन किया तथा रेवाड़ी व नारनौल में अपने थाने बैठा दिये।[8] अजीतसिंह ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अजमेर लेकर मुगल राजपूत सम्बन्धों को और जटिल बना दिया।[9] जब बादशाह दक्षिण से 10 अप्रेल 1710 को टोडा की तरफ होकर लौटा तो सिक्ख समस्या को विकट स्थिति में पा कर राजपूत नरेशों से मेलजोल बढ़ाने के लिए राजी हो गया। फलतः इनको अपने वतन बहाल कर दिये गये और उन्हें शाही इनायतों से सम्मानित किया गया।[10]

जो वफादारी राजपूतों ने अकबर के प्रति रखी थी उसके बन्धन पूर्णरूपेण ढीले हो गये। इस संघर्ष से उन्हें आत्माभिमान जागृत करने की प्रेरणा मिली यहीं से जयसिंह को राजस्थान की राजनीति की बागडोर और अपनी महत्वाकांक्षा को चरितार्थ करने का अवसर मिला।[11]

कोटा– बुँदी संघर्ष

जाजऊ युद्ध से पहले दोनों राज्यों (कोटा व बूँदी) के नरेशों में परस्पर युद्ध कभी नहीं हुआ था और प्रत्यक्ष में बन्धुता का व्यवहार बना हुआ था। [12]

जाजऊ की लड़ाई के बाद बूँदी के राव राजा बुद्धसिंह का शाही दरबार में मान बहुत बढ़ गया था। आजम का पक्ष ग्रहण करने के कारण कोटा के रामसिंह से रूष्ट होकर बहादुरशाह ने बुद्धसिंह को कोटा राज्य पर अधिकार करने की इजाज़त दे दी। इससे कोटा और बूँदी में घोर कलह आरम्भ हो गया और कई लड़ाईयाँ हुई।[13]

बुद्धसिंह ने दो बार कोटा पर सेना भेजी किन्तु दोनों बार ही वह असफल होकर लोट आई। मुगलशासक फर्रूखसियर के शासनकाल में कोटा के महाराव भीमसिंह ने सैयद भाईयों का पक्ष लेकर अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया तथा संवत 1770 में भीमसिंह ने बूँदी पर अधिकार कर लिया। सवाई जयसिंह की बहन अमरकुँवर का विवाह बुद्धसिंह के साथ हुआ था अतएव वह बुद्धसिंह का पक्षधर था। जयसिंह ने बुद्धसिंह को मुगल दरबार में आमंत्रित करवाया और उसको बूँदी का राज्य वापस दिलवाया।[14]

अब यहाँ एक और राजनीतिक गत्थी यह उलझी की अब तक जहाँ कोटा व बूँदी का संघर्ष चल रहा था अब साथ में कोटा– जयपुर संघर्ष भी प्रारम्भ हो गया जिसकी चरम परिणिति 1761 ई. के भटवाड़ा के युद्ध में हुई जहां कोटा के सेनापति झाला जालिमसिंह ने जयपुर के शासक सवाई माधोसिंह की सेनाओं को पराजित किया ।

राजस्थान में अराजकता तथा मराठों का प्रवेश

जाजऊ युद्ध जनित कोटा बूँदी संघर्ष के कारण अनेक युद्ध हुए आमेर के सवाई जयसिंह ने इस संघर्ष को और भी जटिल बना दिया क्योंकि सवाई जयसिंह ने बूँदी के बुद्धसिंह को हटाकर 1730 में दलेलसिंह को बूँदी का शासक बनाया। बृद्धसिंह की कछवाही रानी अमरकुँवरी ने प्रतापसिंह को भेजकर मराठों से सहायता मांगी पेशवा के आदेश से होल्कर 1734 ई. में बूँदी पहुँचा। होल्कर ने बूँदी जीतकर अमरकुँवरी को सौंप दी और अमरकुँवरी ने इसके उपलक्ष्य में 6 लाख रूपये देने के अतिरिक्त होल्कर को अपना राखीबन्द भाई बनाया।[15]

यों राजस्थान में मराठों का प्रवेश हुआ जिन्होंने आगे चलकर राजस्थान को अराजकता की ओर धकेला जो समुचे राजस्थान के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ।

1708 ई. में सवाई जयसिंह ने उदयपुर की राजकुमारी से विवाह करने के अवसर पर महाराणा को वचन दिया था कि उससे पैदा होने वाला पुत्र उसके राज्य का स्वामी होगा। इधर 1722 ई. में खींची रानी सूरजकँवर से ईश्वरी सिंह उत्पन्न हो चुका था। जब 1727 ई. उदयपुरी रानी से माधोसिंह का जन्म हो गया तो राज्य में भावी गृहयुद्ध की आशंका स्पष्ट हो गई।[16] अब सवाई जयसिंह के विरूद्ध माधोसिंह, उम्मेद सिंह व इनका संरक्षक महाराणा तथा कोटा की सेना एकत्रित होने लगी व मराठों की सहायता हेतु प्रयास किया।

1743 ई. में जब सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद ईश्वरी सिंह और माधोसिंह में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष होना प्रारम्भ हुआ। तब मराठों ने इस संघर्ष में माधोसिंह को सैनिक सहायता दी थी। 1747 ई. में राजमहल के मैदान में ईश्वरी सिंह ने माधोसिंह को पराजित किया लेकिन 1748 ई. में बगरू के युद्ध में ईश्वरी सिंह पराजित हुआ। अब ईश्वरी सिंह ने बूँदी उम्मेदसिंह को एवं माधोसिंह को चार परगने देना स्वीकार कर लिया। इसके बाद जब पुनः होल्कर ने जयपुर पर आक्रमण किया तब ईश्वरी सिंह 25 दिसम्बर 1750 को आत्महत्या कर ली। माधोसिंह को जयपुर का राज्य होल्कर की सहायता से प्राप्त हुआ था। अतः होल्कर ने माधोसिंह से रूपया वसूल करने में कमी नहीं रखी।[17]

इस प्रकार जाजऊ युद्ध जनित गुत्थियों के कारण राजस्थान अराजकता के दलदल में फंसता गया, मुगलों का प्रभाव गौण हो गया और मराठे राजस्थान को लूटते रहे जिसके कारण आगे चलकर राजस्थानी शासकों ने अंग्रेजों की और सम्पर्क बढ़ाया।

संदर्भ सूची

1. मआसिरे आलमगीरी पृ.520
2. रघुवीर सिंह, पूर्व आधुनिक राजस्थान पृ.91
3. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास पृ.389
4. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 44–52
5. जोधपुर राज्य के ख्यात जिल्द 2 पृ.83, जगदीश सिंह गहलोत, कछवाहों का इतिहास पृ.121
6. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास पृ 390,वशं भास्कर पृ.3011–3018, लेटर मुगल्स जिल्द 1 पृ. 46–67
7. जे.सी.ब्रक्स कृत मेवाड़ का इतिहास अनुवाद एवं सम्पादक डॉ. देवीलाल पालीवाल पृ.29–30
8. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 53, वीर विनोद भाग 2 पृ.836–37
9. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 53
10. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 54, टॉड भाग 2 पृ.80 इरविन, लेटर मुगल्स भाग 1 पृ. 73
11. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 54,
12. एम.एल. शर्मा, कोटा राज्य का इतिहास भाग 1 पृ 136
13. एम.एल. शर्मा, कोटा राज्य का इतिहास भाग 1 पृ 146
14. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ 58
15. डॉ. निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर पृ.14–15
16. डॉ. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास पृ 399
17. डॉ. निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर पृ 23